
इकाई 10 अंतर-माध्यम अनुवाद : विविध आयाम

इकाई की रूपरेखा

- 10.0 उद्देश्य
- 10.1 प्रस्तावना
- 10.2 अंतर-माध्यम अनुवाद : अनुवाद का व्यापक संदर्भ
- 10.3 अंतर-माध्यम अनुवाद के विविध आयाम
 - 10.3.1 अंतर-माध्यम अनुवाद : अध्ययन की अंतरविधात्मक पद्धति
 - 10.3.2 लिखित पाठ से श्रव्य तथा श्रव्य से लिखित पाठ
 - 10.3.3 लिखित पाठ से दृश्य-श्रव्य तथा दृश्य-श्रव्य से लिखित पाठ
- 10.4 अंतर-माध्यम अनुवाद : साहित्य के विस्तार के संदर्भ में
- 10.5 रूपांतरण : अंतर-माध्यम अनुवाद का एक प्रकार
- 10.6 सारांश
- 10.7 अभ्यास के लिए प्रश्न
- 10.8 उपयोगी पुस्तकें

10.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे :

- अनुवाद के व्यापक संदर्भ से क्या तात्पर्य है;
- अंतर-माध्यम अनुवाद के विविध आयाम कौन-कौन से हैं;
- किस प्रकार अंतर-माध्यम अनुवाद साहित्य अध्ययन को परंपरागत ढाँचे से मुक्त करता है;
- रूपांतरण किस प्रकार अंतर-माध्यम अनुवाद का एक प्रकार है।

10.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आप पढ़ चुके हैं कि अंतर-माध्यम अनुवाद से क्या तात्पर्य है तथा किस प्रकार वह अनुवाद की पारंपरिक अवधारणा से भिन्न है। प्रस्तुत इकाई में आप जानेंगे कि अंतर-माध्यम अनुवाद के विविध आयाम कौन-कौन से हैं तथा किस प्रकार अंतर-माध्यम अनुवाद किसी सीमित विधा तथा साँचे में रखे साहित्य को मुक्त करने का काम करता है। यह मुक्ति साहित्य को पंख लगाने का काम करती है। यँ तो अनुवाद स्वयं में किसी एक भाषा तथा समाज में रचित रचना को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से उसे बहुआयामी बनाता है। एक रचना अनुवाद के माध्यम से भाषा, समाज, संस्कृति और भौगोलिक सीमाओं को लाँघकर बहुपटित बन जाती है। अनुवाद से संबंधित विविध पाठ्यक्रमों तथा स्रोतों के माध्यम से आप यह बात अवश्य जानते होंगे। लेकिन किसी रचना को भाषायी जकड़न से अथवा किसी एक शिल्प अथवा विधा से मुक्त करना उसे और अधिक बहुआयामी तथा दूरगामी बनाता है। अंतर-माध्यम अनुवाद से संबंधित इस खंड के अध्ययन के माध्यम से हम यह जानेंगे कि किस प्रकार अनुवाद की सीमित

परिभाषा से परे अंतर-माध्यम अनुवाद अधिक उदार होकर इन रचनाओं को और अधिक संप्रेषणीय बनाता है।

आप टी.वी., रेडियो, सिनेमा, कार्टून, एनिमेशन, कॉमिक्स आदि विभिन्न विधाओं के बारे में जानते हैं तथा आपको इन सबका अनुभव भी होगा। ये सब क्या हैं? ये सब वास्तव में किसी रचना को प्रदत्त पंख हैं जो अपनी उड़ान में भौगोलिक एवं सांस्कृतिक सीमाएं लांघकर विस्तृत समाज तक पहुँच पाए हैं।

आइए, प्रस्तुत इकाई के माध्यम से जानें कि अंतर-माध्यम अनुवाद किस प्रकार एक ऐसा माध्यम है जो विभिन्न विधाओं, शैलियों तथा टेक्नोलॉजी से जुड़कर रचना को बहुआयामी बनाता है।

10.2 अंतर-माध्यम अनुवाद : अनुवाद का व्यापक संदर्भ

पाठ्यक्रम एम.टी.टी. 031 की इकाई 1 व 2 में आपने अनुवाद के व्यापक संदर्भ, सीमित संदर्भ, अनुवाद के बदलते स्वरूप तथा अनुवाद के विभिन्न प्रकारों के विषय में विस्तार से अध्ययन किया है। आइए, इस इकाई के संदर्भ में एक बार फिर से जानते हैं कि अनुवाद के व्यापक संदर्भ से क्या तात्पर्य है।

प्रतीक विज्ञान की मूलभूत इकाई प्रतीक है। प्रतीक सिद्धांत के प्रतिपादक पीयर्स के मतानुसार प्रतीक वह वस्तु है जो किसी के लिए किसी अन्य वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त होती है। पीयर्स के अनुसार मनुष्य प्रतीक व्यवस्था में ही सोचते हैं। प्रतीक ही शब्दों, चित्रों, ध्वनियों, गंध, आस्वाद, क्रिया अथवा वस्तुओं का आकार लेते हैं। लेकिन मनुष्यों द्वारा इन प्रतीकों में अर्थ रखे जाने से ही ये प्रतीक कहलाते हैं। प्रतीक सिद्धांत के अन्य महत्वपूर्ण प्रवर्तक व संरचनावादी भाषाविद फर्दिनांद द सस्यूर के अनुसार प्रतीक दो तत्वों से मिलकर बना है – संकेतक अर्थात् संकेतन प्रतीक व संकेतित अर्थात् संकेतित वस्तु। प्रतीक के ये दोनों घटक मिलकर ही प्रतीक का निर्माण करते हैं। प्रतीक व्यवस्था में संकेतित वस्तु के लिए एक प्रतीक का प्रयोग होता है जिसे संकेतक कहते हैं। इस प्रकार संकेतक व संकेतित एक-दूसरे के पूरक हैं। इसी से संकेतार्थ स्पष्ट होता है। वहीं प्रतीक सिद्धांत के आधार पर रोमन जेकब्सन ने भाषिक पाठ के अंतरण को तीन आधारों पर देखने का प्रयास किया है –

- आंतर भाषिक अनुवाद (Intra lingual translation)
- अंतर भाषिक अनुवाद (Inter lingual translation)
- अंतर-प्रतीकात्मक अनुवाद (Inter semiotic translation)

आंतर भाषिक अनुवाद से तात्पर्य है एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त पाठ को उसी भाषा की अन्य प्रतीक व्यवस्था में रखना अथवा प्रस्तुत करना। इसे अन्वयांतर भी कहा जाता है। स्पष्ट है कि यहाँ दोनों प्रतीक व्यवस्थाएँ एक ही भाषा से संबंधित होती हैं। संस्कृत में लिखी गई टीकाएँ इसका उदाहरण हैं जहाँ जटिल संस्कृत में लिखे गए काव्य को सरल टीकाओं में व्यक्त किया गया है।

अंतर भाषिक अनुवाद : एक भाषा के प्रतीकों में व्यक्त पाठ को दूसरी भाषा के प्रतीकों में अंतरण को अंतरभाषिक अनुवाद कहते हैं। इसे भाषांतर भी कहा जाता है। स्पष्ट है कि आंतरभाषिक अनुवाद से अलग यह दो भाषाओं के अंतरण की क्रिया है। इस अनुवाद प्रकार में अनुवाद के लिए दो भाषाओं का ज्ञान होना अनिवार्य है। इसे ही अंग्रेजी में 'प्रॉपर ट्रांसलेशन' कहा जाता है। वर्तमान समय में अंतरभाषिक अनुवाद के विशेष माँग

है। विश्व भर में सर्जनात्मक तथा ज्ञानात्मक साहित्य के प्रसार का आधार यही है। चूँकि इसमें दोनों भाषाओं की सक्रिय भूमिका होती है इसलिए इसका महत्व और बढ़ जाता है।

अंतर-प्रतीकात्मक अनुवाद: जहाँ आंतर भाषिक और अंतरभाषिक अनुवाद में प्रतीक 2 का भाषिक इकाई होना अनिवार्य है वहीं अंतर-प्रतीकात्मक अनुवाद में प्रतीक 2 यानी लक्ष्य पाठ भाषिक न होकर भाषेतर होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इसमें भाषिक पाठ का अनुवाद भाषेतर इकाई में होता है। उदाहरण के लिए किसी उपन्यास या कहानी का फिल्म, नाटक या धारावाहिक में रूपांतरण। यहाँ अंतरण भाषिक न होकर रूपगत होता है। शरतचंद्र, प्रेमचंद्र, शेक्सपीयर, मन्सू भंडारी, रस्किन बॉण्ड, आदि की रचनाओं का फिल्म में रूपांतरण इसके उदाहरण हैं। प्रसिद्ध कविता का गीत में और गीत या कविता आदि का विज्ञापन के जिंगल में रूपांतरण भी अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद के उदाहरण हैं।

अनुवाद का व्यापक संदर्भ अनुवाद कर्म को विस्तार देता है। जहाँ अनुवाद का सीमित संदर्भ उसे मूलपाठ केंद्रित रखता है वहीं अनुवाद का व्यापक संदर्भ अनुवाद के दौरान अनुवादक को यथोचित छूट देने का पक्षधर है। सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न पद्धतियाँ जैसे – पुनःसृजन, नवसृजन, आत्मसातीकरण, अनुकूलन, रूपांतरण आदि अनुवाद के व्यापक संदर्भ के ही उदाहरण हैं जिनकी सहायता से असंभव से प्रतीत होने वाले साहित्य का भी एक सीमा तक अनुवाद संभव है। भारतीय साहित्य में अनुवाद के व्यापक संदर्भ के अनेक उदाहरण हैं। भक्तिकाल में *रामायण* तथा *श्रीमद्भागवत* के विभिन्न भारतीय भाषाओं में हुए आत्मसातीकरण अथवा पुनःसृजन मूलतः अनुवाद के व्यापक संदर्भ के सटीक उदाहरण हैं।

अंतर माध्यम अनुवाद वस्तुतः अंतरविधात्मक अनुवाद है जिसमें अनुवादक एक विधा से दूसरी विधा में अनुवाद को संभव बनाते हैं। रूपांतरण से भिन्न अंतर माध्यम अनुवाद विभिन्न विधाओं में आवाजाही की छूट देता है। उदाहरण के लिए, किसी कविता पर बनाई गई पेंटिंग अथवा किसी कविता अथवा गीत पर होने वाली नाट्य प्रस्तुति।

रोमन जेकब्सन द्वारा अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद वस्तुतः अंतर माध्यम अनुवाद ही है किंतु उसकी एक सीमा यह भी है कि वह लिखित से दृश्य अथवा दृश्य-श्रव्य में ले जाने की बात करता है और इस प्रक्रिया में लिखित पाठ को ही अधिक महत्वपूर्ण तथा प्रामाणिक मानता है जबकि अंतर माध्यमिकता तथा इसी के अनुरूप अंतर माध्यम अनुवाद सभी माध्यमों के बीच आवाजाही का पक्षधर है तथा किसी भी माध्यम को कम या अधिक महत्वपूर्ण नहीं मानता। अंतर माध्यम अनुवाद के अनुसार अभिव्यक्ति की कोई भी विधा अपने आप में सार्थक हो सकती है। लिखित को मौखिक अथवा दृश्य से अधिक महत्वपूर्ण मानना साहित्य में निर्मित वर्चस्ववादी परंपरा का ही द्योतक है।

10.3 अंतर-माध्यम अनुवाद के विविध आयाम

10.3.1 अंतर माध्यम अनुवाद : अध्ययन की एक अंतरविधात्मक पद्धति

अंतर माध्यम अनुवाद पर बात करने से पहले आइए यह जानें कि अंतर माध्यम से क्या अभिप्राय है। तुतुन मुखर्जी अपने निबंध *Intrmediality and Translation : Pedagogical Possibilities* में लिखती हैं – *Intermedia as usage and idea was suggested by Fluxus avant-garde artist Dick Higgins in 1968 to refer to the fusions or blending of artistic media or mixed media. In the words of Werner Wolf who has written clearly and comprehensively on Intermediality and the Study of Literature explains (inter)mediality to simply mean the participation of more than one*

medium within an artefact. He adds that in a broad sense intermediality would mean 'transgressing of boundaries between conventionally distinct media.'

तुतुन मुखर्जी के अनुसार, अंतर माध्यम वस्तुतः एक से अधिक माध्यमों के संयोग से बना एक ऐसा माध्यम है जो पारंपरिक माध्यमों की सीमाओं का अतिक्रमण कर अध्ययन के नए आयाम खोलता है। इसके अंतर्गत एक पाठ की व्याख्या करने के लिए विभिन्न माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि आप इंटरनेट पर किसी शब्द अथवा अवधारणा अथवा किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय ढूँढते हैं तो उस विषय विशेष से संबंधित निश्चित जानकारी के साथ ही लिंक तथा हाइपर लिंक की सहायता से उससे संबंधित अन्य जानकारी उपलब्ध करवा दी जाती है। ऐसी स्थिति में आप आवश्यक जानकारी के अतिरिक्त अन्य संबंधित ज्ञान से भी परिचित हो जाते हैं। ठीक इसी तरह, जब हम इंटरनेट पर किसी शब्द का अर्थ ढूँढते हैं तो कंप्यूटरीकृत शब्दकोश में उसका न केवल अर्थ प्राप्त होता है अपितु उससे संबंधित विभिन्न अन्य शब्द, जैसे – पर्याय, विलोम, बहुवचन, आदि के साथ ही उस शब्द के प्रयोग संबंधी जानकारी भी उपलब्ध हो जाती है। इसे ही मल्टीमॉडेलिटी, इंटरमिडियलिटी अथवा अंतर-माध्यम कहा जाता है। ठीक इसी तरह, अंतर माध्यम अनुवाद भी साहित्य अध्ययन की एक आधुनिक पद्धति है जिसकी सहायता से किसी पाठ के बहुआयामी अर्थ को समझने में सहायता मिलती है। उदाहरण की सहायता से यदि बात की जाए तो अध्येताओं को समझाने के लिए किसी कहानी अथवा कविता पर बनी नाट्य प्रस्तुति। किसी पुस्तक पर बना वृत्तचित्र, ज्ञान-विज्ञान के विषयों पर बनाई गई टेलीफिल्म, वृत्तचित्र, ग्राफिक्स, एनिमेशन आदि। इन सब माध्यमों की सहायता से ज्ञान अर्जन न केवल सरल हो जाता है अपितु अधिक रोचक तथा संप्रेषणीय भी हो जाता है। जैसे – इंटरनेट पर आपने जानना चाहा कि मैकबेथ क्या है तो एक साथ आपको इससे संबंधित विभिन्न जानकारियाँ उपलब्ध हो जाएँगी जैसे – मैकबेथ संबंधित जानकारी कि वह किसकी रचना है, कब लिखी गई, उसकी कथावस्तु क्या है, आदि तथा साथ ही, मैकबेथ पर आज तक बनी फिल्में, नाटक, संवाद, एकांकी, शोधकार्य, उसमें प्रयोग होने वाले विभिन्न शब्द तथा उनकी अवधारणाएँ, उनके विभिन्न प्रयोग, उसके विभिन्न रूपांतरण संबंधित जो भी जानकारी इंटरनेट पर उपलब्ध होगी, वह सब एक साथ एक स्थान पर प्राप्त हो जाएगी जो उस विषय संबंधी आपके ज्ञान को न केवल बढ़ाएगी अपितु उसके माध्यम से आप उससे संबंधित अन्य जानकारियों को भी हासिल कर पाएँगे।

वहीं अपने निबंध *Translating Painting into Dance* में वेनेसा मोंटेसी अपनी बात को पुष्ट करते हुए Bruhn को उद्धृत करती हैं – *The discipline of intermediality developed from Interart Studies, opening its investigation to a broader set of aesthetic and technological practices, and thus overcoming the divide between high and low culture* (Bruhn 2016).

वे आगे Rajewsky को उद्धृत करती हैं – *The term Intermedialitat (intermediality) was introduced in 1983 by Hansen-Love and picked up recently as an umbrella term for all kinds of phenomena taking place among media* (Rajewsky 2010).

इंटरमीडिया अर्थात् अंतर माध्यम को आगे व्याख्यायित करते हुए वे जोड़ती हैं – *The intermedial level is in turn divided into media combination, where different media are combined to form a new one (comic, ballet), media transposition, which concerns the coming into being of a new media product (adaptation, novelisation – here I will subsume them under the term intermedial translation), and intermedial reference, which happens when a medium imitates or evokes*

techniques that are normally associated with another but without crossing its own borders (Rajewsky 2010).

अंतर-माध्यम अनुवाद :
विविध आयाम

अर्थात् अंतर माध्यम से तात्पर्य ऐसी मिश्रित विधा से है जिसमें विभिन्न माध्यमों के प्रयोग से एक नए माध्यम का उद्भव होता है और जो ज्ञान के संसार को विस्तार देने में सहायक है। वेनेसा मॉटेसी रूपांतरण को अंतर माध्यम का ही एक उदाहरण मानती हैं जिसमें किसी पाठ पर निर्मित फिल्म, वृत्तचित्र, नाटक अथवा ऑडियो बुक आदि उसके परिदृश्य को बहुकोणीय बनाता है। रूपांतरण की सहायता से लिखित पाठ अपनी भाषायी सीमाओं से मुक्त होकर दृश्यों तथा रिकॉर्डिंग, सबटाइटलिंग, डबिंग आदि की सहायता से जीवंत हो उठता है। रूपांतरण की सहायता से पाठ में वर्णित देशकाल तथा वातावरण को भी यथासंभव उभारा जा सकता है।

10.3.2 लिखित पाठ से श्रव्य तथा श्रव्य से लिखित पाठ

अनुवाद अध्ययन में अंतर माध्यम अनुवाद की ओर सबसे पहले संकेत रोमन जेकब्सन करते हैं जहाँ वे अनुवाद के तीन प्रकारों की चर्चा करते हुए अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद को भी अनुवाद का एक रूप मानते हैं। लेकिन इसकी सबसे बड़ी सीमा यही है कि वे लिखित माध्यम को अधिक महत्व देते हैं जबकि अंतर माध्यम के अंतर्गत विधा का कोई पदानुक्रम निर्धारित नहीं है। अर्थात् अंतर माध्यम अनुवाद एक विधा से दूसरी विधा में अभिव्यक्त करने का पक्षधर है और इस क्रम में विभिन्न विधाओं के बीच अंतःक्रिया अथवा आवाजाही होती है। लिखित पाठ से श्रव्य तथा श्रव्य से लिखित पाठ अंतर माध्यम अनुवाद का एक प्रकार है। इस दृष्टि से कविता अथवा शायरों द्वारा लिखे गए कलामों पर बने गीत, लिखित नाटकों का रेडियो रूपांतरण तथा कथा साहित्य अथवा गैर-सर्जनात्मक साहित्य पर निर्मित ऑडियो बुक्स लिखित पाठ से श्रव्य के उदाहरण हैं।

आइए, लिखित से श्रव्य अनुवाद के कुछ प्रकारों की चर्चा करें –

कविताओं पर बने गीत – भारतीय सिनेमा में इसके अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं जहाँ प्रसिद्ध कवि तथा शायरों की कविताओं को गीतों में ढाला गया है। हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखित *अग्निपथ* इसका उदाहरण है।

कथा साहित्य पर निर्मित ऑडियो बुक्स – कथा साहित्य का ऑडियो रूप वर्तमान समय में बेहद प्रचलित है। यूँ तो पहले भी दृष्टिबाधित लोगों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए ऑडियो बुक्स का प्रचलन था लेकिन वर्तमान में समयाभाव को देखते हुए तथा रिकॉर्डिंग की सरल तथा सहज व्यवस्था उपलब्ध से यह विधा और अधिक प्रचलित हो रही है। अब हम अपना मनपसंद साहित्य ऑडियो रूप में भी सुन सकते हैं।

रेडियो रूपांतरण – विभिन्न महत्वपूर्ण नाटककारों द्वारा लिखित नाटकों का रेडियो रूपांतरण तथा विभिन्न रचनाकारों की कहानियों व उपन्यासों का रेडियो द्वारा प्रसारण इसके अन्यतम उदाहरण हैं।

पॉडकास्ट – पॉडकास्ट भी लिखित से श्रव्य का अन्यतम उदाहरण है। सीमित समयावधि में छात्रों की सुविधा के लिए तथा उन्हें घर बैठे सामग्री उपलब्ध करवाने की दृष्टि से पॉडकास्ट बेहद कारगर हैं। इसके अंतर्गत अध्ययन सामग्री को रोचक ढंग से रिकॉर्ड करके तथा वॉयस मॉड्यूलेशन आदि का प्रयोग करके विभिन्न विषयों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। कोविड के दौरान प्रचलित हुई ऑनलाइन शिक्षा में विभिन्न श्रेणी के छात्रों के लिए इसका प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया।

श्रव्य से लिखित पाठ निर्माण के अंतर्गत गीत, कविता, संगीत आदि को सुनते हुए उस पर पेंटिंग बनाना, किसी लोकगीत अथवा कथा को आधार बनाकर कोई कविता अथवा कहानी

10.3.3 लिखित पाठ से दृश्य—श्रव्य तथा दृश्य—श्रव्य से लिखित पाठ

लिखित पाठ से दृश्य—श्रव्य के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। पाठ से दृश्य, पाठ से मंच तथा स्क्रीन रूपांतरण इसके अन्यतम उदाहरण हैं।

पाठ से दृश्य रूपांतरण से तात्पर्य किसी रचना को आधार बनाकर निर्मित चित्र तथा पेंटिंग से है। इसमें उदाहरण स्वरूप रबींद्रनाथ टैगोर द्वारा अपनी ही कविताओं को आधार बनाकर बनाए गए चित्र देखे जा सकते हैं। इसके साथ ही, विश्व साहित्य से कुछ और महत्वपूर्ण रचनाओं को लिया जाए तो शेक्सपीयर के नाटक *हेमलेट* की चरित्र *ओफेलिया* के आधार पर जॉन एवरेट मिलियास द्वारा निर्मित पेंटिंग *ओफेलिया* भी इसका एक खूबसूरत उदाहरण है। इसी तरह, लुईस केरोल के बेहद चर्चित उपन्यास *एलिस इन वंडरलैंड* को आधार बनाकर सल्वडोर डली द्वारा 12 अध्यायों के आधार पर बनाई गई पेंटिंग की श्रृंखला को भी उदाहरणस्वरूप देखा जा सकता है।

पाठ से मंच रूपांतरण के अंतर्गत किसी लिखित विधा को दृश्य—श्रव्य यानी नाटक में ढाला जाता है। इसके अंतर्गत कहानी, उपन्यास, कविता आदि पर निर्मित नाट्य प्रस्तुतियाँ इसके उदाहरण हैं। विश्व साहित्य में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहाँ चर्चित कहानियों तथा उपन्यासों आदि पर अनेक नाट्यमंचन हुए हैं। हिंदी के महत्वपूर्ण कवि मुक्तिबोध की कविता *अंधेरे में*, *ब्रह्मराक्षस*, निराला की कविता *राम की शक्तिपूजा* तथा जयशंकर प्रसाद के काव्य *कामायनी* पर निर्मित नाट्य प्रस्तुतियों को यहाँ उदाहरणस्वरूप देखा जा सकता है।

इसी तरह पाठ से स्क्रीन रूपांतरण के अंतर्गत कथा साहित्य पर निर्मित फिल्में देखी जा सकती हैं। विश्व सिनेमा की बात करें तो ऐसे अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। एलिस वॉकर के उपन्यास *'द कलर पर्पल'* पर निर्मित फिल्म *'द कलर पर्पल'*, विसटन गूम की रचना फॉरेस्ट गंप पर इसी नाम से निर्मित फिल्म, मारियो पूजो के उपन्यास *'द गॉडफादर'* पर इसी नाम से निर्मित फिल्म, जेम्स जॉयस की कहानी *'द डेड'* पर इसी नाम से बनी फिल्म आदि। भारतीय सिनेमा में साहित्यिक रूपांतरण के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं जिनमें प्रेमचंद की कहानी *'शतरंज के खिलाड़ी'* पर बनी फिल्म, राजेंद्र यादव के उपन्यास *'सारा आकाश'* पर बनी फिल्म, मन्नू भंडारी की कहानी पर बनी फिल्म *'रजनीगंधा'*, विजयदान देथा की कहानी *'दुविधा'* पर *'बनी पहेली'*, शरतचंद्र के उपन्यासों *'परिणीता'*, *'देवदास'* पर बनी फिल्में, महाश्वेता देवी की रचना *'हजार चौरासीवें की मां'* पर बनी फिल्म आदि।

10.4 अंतर—माध्यम अनुवाद : साहित्य के विस्तार के संदर्भ में

अनुवाद चिंतक मारिया टिमोकज़को अपने निबंध *Enlarging Translation, Empowering Translators* (2007) में यह चिंता व्यक्त करती हैं कि अनुवाद की परिभाषा को यूरोकेंद्रित अथवा पश्चिम केंद्रित रखना उसकी संभावनाओं को सीमित अथवा अनदेखा करना है। वे अपने इस निबंध में अनुवाद के पाश्चात्य सिद्धांतों में विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों से आने वाले अनुवाद सिद्धांतों को भी शामिल करने की बात कहती हैं। अपने इस निबंध में टिमोकज़को अनुवाद को एक भाषा से दूसरी भाषा में ले जाने वाली गतिविधि तक सीमित करने का विरोध करती हैं क्योंकि वह मूल पाठ की निष्ठा के इर्द-गिर्द ही बुना होता है। टिमोकज़को के अनुसार अनुवाद के संरचनापरक सिद्धांत

उसे समतुल्य खोजने तक ही सीमित कर देते हैं। नायडा के अनुसार *Translation is the replacement of textual material in one language (SL) by equivalent textual material in another language*. वहीं संरचनावादी भाषाविद् सस्पूर के अनुसार भाषा के दो स्तर होते हैं – बाह्य संरचना (surface structure) तथा आंतरिक संरचना (deep structure)। भाषा की बाह्य संरचना जहाँ भाषा के व्याकरणिक रूप की ओर संकेत करती है, वहीं भाषा की आंतरिक संरचना भाषा की सामाजिक-सांस्कृतिक निर्मिति की ओर संकेत करती है। संकेतक और संकेतित की यह नियत परिभाषा न केवल भाषा की बहुआयामिता को बाधित करती है अपितु अनुवाद की भाषा केंद्रित ये परिभाषाएँ उसके विस्तार पर भी अंकुश लगाती हैं। अनुवाद की इस सीमित समझ को गेंबियर तथा केंदल जैसे अनुवाद चिंतक चुनौती देते हैं और अनुवाद को पुनःपरिभाषित करते हुए अंतर माध्यम तथा बहुमाध्यम को शामिल करने की वकालत करते हैं। केंदल अपने निबंध *Multimodality in Translation* में लिखते हैं – *if we take multimodality seriously, this ultimately means that transfer of texts without language dimension or the concentration on non-language modes of a text are a part of the prototypic field of translation studies*. अर्थात् यदि बहुमाध्यम को गंभीरता से लिया जाए तो वह अनुवाद अध्ययन के लिए आदर्श होगा क्योंकि इसमें भाषा की बाध्यता से परे अथवा गैर-भाषा आधारित माध्यमों की सहायता से पाठ का अंतरण अधिक सुगम और बेहतर होगा।

उत्तर-आधुनिक चिंतक जॉक देरिदा के अनुसार भी भाषा शब्द को एक नियत अर्थ के साथ बाँधती है। वे भाषा में संकेतक तथा संकेतित की तय भूमिका का विरोध करते हैं और कहते हैं कि एक संकेतक का एक नियत संकेतित अर्थ पाठ की बहुआयामिता को बाधित करता है जिसके परिणामस्वरूप पाठ में छिपे विभिन्न संदर्भ अनदेखे रह जाते हैं। वे पाठ को एक मुक्त इकाई के रूप में देखते हैं और मानते हैं कि लिखने अथवा प्रकाशित हो जाने के बाद पाठ लेखक से मुक्त होकर पाठक का हो जाता है और पाठक विभिन्न संदर्भों, परिस्थितियों तथा कालखंडों में उसमें छिपे विभिन्न निहितार्थों को डीकोड कर सकते हैं। अनुवाद अध्ययन में पाठ को भाषा की सीमा से मुक्त करने की वकालत करते हुए मारिया टिमोकज़को, केंदल तथा गेंबियर अपने निबंधों में उसके बहुआयामी होने की ओर संकेत करते हैं और मानते हैं कि जब कोई पाठ किसी एक तरीके अथवा पद्धति से ही अनूदित न होकर विभिन्न विधाओं, शैलियों तथा अभिव्यक्ति के माध्यमों में अभिव्यक्त होगा तब वह अधिक खुलेगा, पाठक अथवा सुधिजनों से और अधिक गहरे जुड़ेगा तथा विभिन्न माध्यमों में अभिव्यक्त होकर उसकी पहुँच अधिक विस्तृत होगी।

उदाहरण के रूप में यदि बात की जाए तो छायावादी कवि निराला द्वारा रचित 'राम की शक्ति पूजा' कविता का पाठ जहाँ उसके विभिन्न संदर्भों और तत्कालीन समय में उसकी प्रासंगिकता को सिद्ध करता है वहीं उसका नाट्य मंचन वर्तमान समय में उसके महत्व को और दुगुना कर देता है। मंचन, पाठन, गायन आदि विभिन्न माध्यमों से गुज़रते हुए वह रचना अपनी भाषा, विधा, सहृदय वर्ग तथा कालगत सीमा को लाँघकर एक व्यापक समाज तक पहुँचती है और सही मायनों में कोई रचना कालजयी हो जाती है। भाषा की उत्तर-संरचनावादी परिभाषा की दृष्टि से देखा जाए तो विभिन्न माध्यमों की सहायता से रचना में निहित संदर्भ संकेतक और संकेतित की सीमित परिभाषा से मुक्त होकर वस्तुतः पाठक, दर्शक, श्रोता, सहृदय की बायनरी से मुक्त होकर बहुआयामी हो जाती है और सहृदय अपनी क्षमता के अनुसार उसका आस्वादन करते हैं।

अंतर माध्यम अनुवाद के पक्ष में अपनी बात कहते हुए तुतुन मुखर्जी अपने इसी निबंध में कहती हैं कि पाठ के साथ अंतर माध्यम अनुवाद अथवा प्रस्तुति के माध्यम से पाठ न

केवल अधिक प्रामाणिक हो जाता है अपितु पाठ की आलोचनात्मक अथवा विवेचनात्मक समझ निर्मित करने में पाठक अथवा सहृदय की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। वे लिखती हैं कि यह वास्तव में बोर्दिआ द्वारा चर्चित साहित्य के स्वतुल्य समाजशास्त्र अर्थात् रिप्लेक्सिव सोशयोलॉजी का उदाहरण है जिसमें साहित्य स्वयं अध्ययन का विषय बन जाता है और उसके माध्यम से सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन किया जा सकता है। सरल शब्दों में कहें तो साहित्य के अध्ययन को केवल उस विषय विशेष तक सीमित न रखकर यदि समाजशास्त्रीय संदर्भ में देखा जाए तो वह समाज में हो रहे परिवर्तनों के कारणों की पड़ताल का माध्यम हो सकता है। अंतर माध्यम तकनीकों की सहायता से यदि साहित्य को व्यापक संदर्भ में देखा व समझा जाए तो उसकी भूमिका केवल सौंदर्यशास्त्रीय न रहकर व्यापक अर्थों में समाजशास्त्रीय हो जाती है।

अंतर माध्यम अनुवाद अथवा पाठ के प्रस्तुतीकरण में विभिन्न माध्यमों के प्रयोग से पाठ न केवल बहुआयामी होता है अपितु पाठक अथवा सहृदय के लिए उसका अभिग्रहण भी उतना ही बहुआयामी हो जाता है।

अपने इसी निबंध में तुतुन मुखर्जी अंतर-माध्यम अनुवाद का समर्थन करते हुए गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक को उद्धृत करते हुए लिखती हैं कि अनुवाद को नकल अथवा कृत्रिमता से ऊपर उठकर अधिक सक्रिय रूप में काम करना चाहिए। अनुवाद को केवल भाषांतरण तक सीमित नहीं होना चाहिए और अर्थ के विभिन्न आयामों तक पहुँचना चाहिए। वे देरिदा के विखंडनवाद का संदर्भ लेते हुए कहती हैं कि पाठ के अनुवाद में संकेतक तथा संकेतित के माध्यम से एक निश्चित अर्थ तक पहुँचना ही अनुवाद का काम न हो अपितु शब्द का कार्य इससे व्यापक हो जो अपनी पुनःप्रस्तुति में विभिन्न अर्थच्छायाओं को समेटे हुए हो। *(The translation practice must move beyond the simple correspondence of languages and try to 'play' with their materiality. The philosophy of deconstruction suggests that instead of constituting the end product as a synthesis or a unification of the signifier and signified, the word must be regarded as a force-field of disassociations. Pg 14)* इस तरह अस्थिर संकेतक की अवधारणा को केंद्र में रखकर किया गया अनुवाद अंतर्पाठीयता तथा संदर्भों के नए आयामों तक पहुँचेगा। *(Any translation inspired by the concept of the 'floating signifier' would thus search for new intertextualities and associations. (pg. 14)*

और यह सब तभी संभव होगा जब किसी पाठ को तथा उसके अनुवाद को भाषायी सीमा से मुक्त कर उसका बहुआयामी अनुवाद किया जाए ट्रांसलेशन प्रॉपर की सीमित परिभाषा से बहुत आगे यह अनुवाद अपने कलेवर में पुनःसृजन, नवसृजन, आत्मसातीकरण, रूपांतरण तथा अंतर-माध्यम अनुवाद को समेटे हुए है जो पाठ के पुनःप्रस्तुतीकरण में विभिन्न तरीकों तथा तकनीकों की मदद लेने का पक्षधर है। इसी आधार पर जब किसी पाठ का अनुवाद किया जाता है तो वह बहुआयामी हो जाता है और उस पाठ के आस्वादन में केवल पाठ या लेखक का सीमित दृष्टिकोण ही नहीं होता अपितु रूपांतरणकर्ता अथवा अनुवादक का अपना दृष्टिकोण, तकनीक, परिवेश, और उससे जुड़े विभिन्न संदर्भ जुड़ते चले जाते हैं। ऐसी स्थिति में किसी भी पाठ का अध्ययन एकांगी हो ही नहीं सकता।

अंतर-माध्यम के एक प्रकार के रूप में ही रूपांतरण को देखा जाता है। इसके अंतर्गत किसी सर्जनात्मक अथवा गैर-सर्जनात्मक पाठ का पुनःप्रस्तुतीकरण किया जाता है। इकाई के अगले भाग में अंतर-माध्यम के एक प्रकार के रूप में रूपांतरण की चर्चा की जा रही है।

अभी तक आपने जाना कि अंतर-माध्यमिकता से क्या आशय है। इसके साथ ही आपने अंतर-माध्यम अनुवाद के विषय में विस्तार से अध्ययन किया। अंतर-माध्यम अनुवाद किसी पाठ को बहुआयामी बनाता है। साहित्य के प्रचार-प्रसार में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। अंतर-माध्यम अनुवाद के एक प्रकार के रूप में रूपांतरण को देखा जा सकता है। रूपांतरण की विभिन्न तकनीकों के माध्यम से पाठ भाषायी बंधन से मुक्त होकर अधिक संप्रेषणीय हो जाता है तथा भाषायी, सामाजिक-सांस्कृतिक, भौगोलिक व कालखंड की सीमाओं को लाँघकर एक व्यापक समाज से जुड़ जाता है। परिणामस्वरूप वह व्यापक समाज उस पाठ का आस्वादन करते हुए उसे अपने समाज व परिस्थितियों में रखकर देखता है व डीकोड करता है। ऐसा होते ही, वह पाठ लेखक के सीमित दायरे से मुक्त होकर व्यापक समाज से जुड़ जाता है तथा उसकी विभिन्न व्याख्याएँ संभव हो जाती हैं। देरिदा के दृष्टिकोण से देखा जाए तो वह पाठ निश्चित संकेतक व व उसके संकेतार्थ तक सीमित नहीं रहता। रूपांतरण के माध्यम से ऐसे अनेक उदाहरण आपने भी अवश्य देखे होंगे।

रूपांतरण को विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग तरीके से व्याख्यायित किया है। इस संदर्भ में विनय तथा डार्बलनेट द्वारा दी गई परिभाषा सबसे उपयुक्त है। विनय तथा डार्बलनेट अनुवाद की सात विभिन्न पद्धतियाँ बताते हैं जिनमें सातवीं अनुवाद पद्धति है – रूपांतरण।

Adaptation is a procedure which can be used whenever the context referred to in the original text does not exist in the culture of the target text, thereby necessitating some form of re-creation.

अर्थात् अनुवाद की एक ऐसी पद्धति है जिसका उपयोग लक्ष्यभाषा और संस्कृति में समतुल्य न मिलने पर किया जा सकता है। इस प्रकार रूपांतरण मूलतः लक्ष्यभाषा में पुनःसृजन की ओर ले जाता है। स्पष्ट है कि विनय तथा डार्बलनेट द्वारा दी गई रूपांतरण की परिभाषा अपने स्वरूप में बेहद व्यापक है जिसके अंतर्गत पुनःसृजन, अनुसृजन, नवसृजन, अनुकूलन, रूपांतरण सबको समेटा जा सकता है।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ट्रांसलेशन स्टडीज़ के अनुसार अनुवादक/अनुवादिका विभिन्न परिस्थितियों में रूपांतरण को एक रणनीति के रूप में उपयोग करते हैं –

1. क्रॉस-कोड ब्रेकडाउन अर्थात् लक्ष्यभाषा में निकटतम समतुल्य न मिलने की स्थिति में – जब स्रोतभाषा पाठ में प्रस्तुत किसी अवधारणा का समतुल्य लक्ष्यभाषा में उपलब्ध ही न हो।
2. पारिस्थितिक अथवा सांस्कृतिक अपर्याप्तता – जब स्रोतभाषा पाठ में प्रस्तुत कोई संदर्भ अथवा विचार लक्ष्य भाषा में उपलब्ध न हों।
3. विधागत परिवर्तन – जब मूलभाषा पाठ के अनुवाद के दौरान उसमें विधागत परिवर्तन कर दिया जाए ऐसा अक्सर पाठ को वैश्विक स्तर पर प्रसिद्धि दिलवाने के लिए किया जाता है।
4. संप्रेषण प्रक्रिया में विघ्न होने पर – जब किसी पाठ को रूपांतरण के माध्यम से एक नया आयाम देना अथवा अलग पाठक अथवा दर्शक वर्ग के लिए मूल पाठ की शैली, कथ्य अथवा प्रस्तुति में परिवर्तन करना।

पिछली इकाई में हम पढ़ चुके हैं कि अनुवादक विभिन्न स्थितियों में पाठ का रूपांतरण करते हैं। सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद वस्तुतः रूपांतरण का ही उदाहरण है क्योंकि सर्जनात्मक साहित्य में निहित समाज विशेष की संस्कृति और परिवेश अनुवादक के लिए विशेष चुनौती होते हैं। ऐसे में अनुवादक पाठ विशेष का अनुवाद करते हुए यथासंभव छूट लेते हैं और सांस्कृतिक परिवर्तन करते हुए पाठ का अनुवाद करते हैं। किंतु मंच तथा फिल्म रूपांतरण के संदर्भ में कहें तो फिल्म रूपांतरण का वास्तविक उद्देश्य क्रॉस-कोड ब्रेकडाउन अर्थात् लक्ष्य भाषा में निकटतम समतुल्य की अनुपलब्धता न होकर पाठ को व्यापक समाज तक पहुँचाना तथा इसके माध्यम से उसे विश्वव्यापी बनाना है। विशेषतौर पर फिल्म रूपांतरण की बात करें तो निर्देशक किसी भाषा विशेष से कथा अथवा कविता को उठाकर उसे एक अलग परिवेश में निर्मित करते हैं और इस तरह उसकी प्रभावोत्पादकता में वृद्धि करते हैं। उदाहरण के लिए, 1957 में तपन सिन्हा द्वारा रबींद्रनाथ टैगोर की कहानी *काबुलीवाला* पर बनी बांग्ला तथा हिंदी फिल्मों को देखा जा सकता है। अपने उसी निबंध में तुतुन मुखर्जी लिखती हैं कि बांग्ला समाज में अफगानी व्यापारियों को लेकर एक नकारात्मक छवि है कि वे बहुत क्रूर होते हैं। किंतु रबींद्रनाथ टैगोर की कहानी *काबुलीवाला* में काबुलीवाला का चरित्र एक बेहद ममतामयी तथा निश्चल व्यक्ति का है जो नन्हीं-सी बच्ची मिनी को देखकर भावुक हो जाता है और अपनी बच्ची को याद करता है। इसी कहानी पर 1961 में बिमल रॉय द्वारा निर्मित फिल्म *काबुलीवाला* हिंदी समाज में उसी बांग्ला कथा को एक नए मायने में प्रस्तुत करती है जहाँ *काबुलीवाला* की भूमिका में बलराज साहनी बेहद ममतामयी, सरल और निश्चल दिखाई देते हैं। और इन दोनों ही फिल्मों के माध्यम से अफगानी व्यापारियों के लिए निर्मित नकारात्मक छवि को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस दृष्टि से देखा जाए तो रूपांतरण पाठ के संकेतक तथा संकेतित तक सीमित अर्थ को विस्तार देकर उसे बहुआयामी बनाता है। अनुवाद का सीमित संदर्भ जहाँ पाठ को मूल के निकट तथा समतुल्य बनाने पर बल देता है वहीं अनुवाद का यह व्यापक संदर्भ उसे संकेतक तथा संकेतित, मूल पाठ तथा अनूदित पाठ, मूल तथा नकल की बायनरी से मुक्त कर एक स्वतंत्र इकाई के रूप में स्थापित करता है।

10.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने जाना कि अंतर-माध्यमिकता से क्या तात्पर्य है, अंतर-माध्यम अनुवाद से क्या तात्पर्य है तथा अंतर-माध्यम अनुवाद किस प्रकार पाठ को अपनी सीमाओं से मुक्त कर उसे बहुआयामी बनाता है। किसी भी पाठ या संदर्भ को यदि उसके सीमित संदर्भ तथा सीमित माध्यम में समझा जाए तो कई बार उसके एकांगी हो जाने की आशंका रहती है। लेकिन उस पाठ की व्याख्या में यदि विभिन्न माध्यमों की सहायता मिल जाए तथा पाठक या भोक्ता उसका आस्वाद करते हुए उसके अनेक संदर्भों तथा निहितार्थों तक पहुँच पाए तो उससे न केवल रचना बहुआयामी तथा बहुपक्षीय हो जाती है अपितु एक पाठक अथवा सहृदय के रूप में उसके ग्राहक का भी चहुँमुखी विकास होता है। अंतर-माध्यम अनुवाद मूलतः पाठ को अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों, तकनीकों तथा विधाओं से जोड़ने का पक्षधर है जिनकी सहायता से पाठ अपनी भाषायी, क्षेत्रीय, काल, विधा आदि की सीमाओं से मुक्त होकर बहुआयामी हो जाता है और इस तरह एक व्यापक सहृदय समाज तक जुड़कर न केवल पाठ का अर्थान्तरण करता है अपितु उससे जुड़े समय, समाज, इतिहास आदि विभिन्न आयामों से भी परिचित करवाता है। रूपांतरण अंतर-माध्यम अनुवाद का एक बेहद महत्वपूर्ण तथा चर्चित प्रकार है जो सर्जनात्मक साहित्य – कथाओं, कविताओं, नाटकों, गीतों से लेकर ज्ञान प्रधान साहित्य

—इतिहास, विज्ञान, समाजशास्त्र आदि विभिन्न विषयों को विभिन्न तकनीकों की सहायता से पुनःप्रस्तुत करके अधिक ग्राह्य, सुगम तथा रोचक बनाता है।

अंतर-माध्यम अनुवाद :
विविध आयाम

10.7 अभ्यास के लिए पश्न

1. अंतर-माध्यम से क्या अभिप्राय है?
2. विभिन्न अंतर-माध्यम तकनीकें कौन-कौन सी हैं?
3. अंतर-माध्यम अनुवाद से आप क्या समझते हैं?
4. अनुवाद के सीमित संदर्भ तथा व्यापक संदर्भ में क्या अंतर है?
5. रोमन जेकब्सन के अनुवाद सिद्धांत में अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद की व्याख्या कीजिए।
6. किसी पाठ के संप्रेषण एवं अभिग्रहण में अंतर-माध्यम अनुवाद क्या भूमिका निभाता है?
7. अंतर-माध्यम अनुवाद और रूपांतरण में क्या अंतर है?
8. क्या रूपांतरण अंतर-माध्यम अनुवाद का एक प्रकार है? यदि हाँ, तो वर्णन कीजिए।
9. अनुवाद की एक रणनीति के रूप में रूपांतरण की व्याख्या कीजिए।
10. पाठ के संकेतक और संकेतित अर्थ से क्या अभिप्राय है?

10.8 उपयोगी पुस्तकें

- Catford, John Cunnison, 1965, A Linguistic Theory of Translation, Oxford : Oxford University Press.
- Tymoczko, Maria, 2006, Reconstructing Translation Theory, Integrating non-western Thought about Translation, Theo Hermans (ed.), (2006). Translating Others, vol.1. Manchester:John Benjamin Publishing Company.
- Tymoczko, Maria, 2007, Enlarging Translation, Empowering Translators, Manchester : St. Jerome Publishing
- Mukherjee, Tutun, 2012, Tagore's Women Protagonists through Ray's Camera : Re-presenting the Shifting Concepts of History, Culture and Identity, In Mohd. Asaduddin and Anuradha Ghosh (eds.), Filming Fiction : Tagore, Premchand and Ray, New Delhi, Oxford University Press.
- Mukherjee, Tutun, Intermediality and Translation: Pedagogical Possibilities, <https://www.ntm.org.in/download/ttvolèvolume12-2èarticle%201.pdf>
- Montessi, Vanessa, Translating Paintings into dance : Marie Chouinard's The Garden of Earthly Delights and the challenges posed to a verbal-based concept of Translation, https://jostrans.orgèissue35èart_montesi.pdf

